

भराओ

क्र. नं. ३८

वेदान्त

इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ धुळे.

—: हस्त लिखित ग्रंथ संग्रह —

ग्रंथ क्रमांक

४३४:वे ५४ (३१०)

ग्रंथ नाम

गीता-भगवत्.

विषय

म. वेदांत.

(२)

अ०
२

तें॥५॥आणिक॥द्रोणजो त्यांतें॥द्रुमिः॥बाणजे तें हिकस्तन॥प्रतियोत्स्यामि॥
 ते युद्ध करितील॥मिहिं युद्ध करूं॥अरिस्तदनं॥पूजा हो॥पुजे सियो ग्य॥पेदं॥१५॥६॥
 गुरुन हत्वा हि महानुभावान् श्रेयो भोक्तुं नैक्ष्यमपीह लोके॥हत्वार्थकामांस्त
 गुरुनि हैव भुंजीय भोगान् रूधिरप्रदिग्धान्॥५॥१०॥गुरुन॥गुरुजे त्यांतें॥
 हत्वा॥मारुत॥हि॥निश्रेयं सिं॥महानुभावान्॥थो आह अनुभव जो तो॥अं
 वा॥ऐसे जे त्यांतें॥श्रेयः॥श्रेयस्कर जे ते॥भोक्तुं॥भोगावयाकारणें॥इह लोके॥
 या लोकाचे गर्द॥नैक्ष्यं॥मिष्टामागणें॥अपि॥श्रेष्ठतर॥हत्वा॥मारुत॥अर्थकामा
 न॥अर्थविषमने रघोतें॥तु॥पुन॥गुरुन॥गुरुते॥इहै॥यावला काव्याग
 दं॥भोगान्॥भोगजे त्यांतें॥भुंजय॥भोगून॥रूधिरप्रदिग्धान्॥यां व्याकृतने
 काल विले ऐसे भोगुं॥पेदं॥१५॥५॥नैवेत द्विप्रः कतरं नोगरीयो यद्वा जयेम य
 दिवानो जयेयुः॥योनव हत्वा न जिजीविषाम स्ते वस्तिताः प्रमुखे धार्तराष्ट्राः॥
 ॥६॥१०॥न॥५॥एतत्॥विप्रः॥आणिक॥हिं हिं जाणत नाहिं॥कतरन॥कि
 त्नेयक॥नः॥आमेव॥गरीयाः॥थोर होऊं॥यद्वा॥जयेमाजि कुं जरितरि॥य
 दिवा॥विकल्पें करुन॥जरि॥नः॥अपात्य॥जयेयुः॥जिं कितील तरिं॥योनव॥
 यातेव॥हत्वा॥मारुत॥न जिजीविषाम॥आही त्ववां वां ऐसे का हिं नाहिं ते तुं॥

९

(2A)

धृतराष्ट्र पुत्रजेते ॥ कैसे जाले ॥ प्रमुखे ॥ संग्राम मुख्यागर्ह ॥ अवस्थिताः ॥ ७
मेराहिले जो हेता ॥ पेदे ॥ १५५ ॥ ६५ ॥ कार्पण्य दोषो पहतः स्वभावः पृष्ठमित्रां धर्मसं
मूढवेताः ॥ यः श्रेयस्याभिश्चितं ब्रूहितने शिष्यस्ते हं राधिमां त्वां प्रपन्नं ॥ ७॥
तेतु ॥ ते कैसे ॥ कार्पण्य दोषो पहतः स्वभावः ॥ कृपणता दोषो जेतें कं रुत नारा
तं पावकिला अहे स्वभाव ज्यां न्या ॥ ऐसे जेतें ॥ धर्मसंमूढवेताः ॥ धर्मो पासून न्य
वले अहे अंतः कृणुयावे ॥ त्वां ॥ तुतें ॥ पृष्ठमित्र ॥ पुस्तो ॥ यतत् ॥ जे ॥ श्रेयः स्या
त् ॥ उत्तमज से लें ॥ निश्चितं ॥ निश्चयांतें ॥ मे ॥ मजकारणे ॥ तत् ॥ ते ॥ ब्रुहि ॥ बोला ॥
अहं ॥ मी ॥ गतो ॥ तुझा ॥ शिष्यः ॥ शिष्य जोह ॥ मां ॥ माते ॥ त्वां ॥ तूतें ॥ प्रपन्नं ॥ वारणा
गतोतें ॥ राधि ॥ शिक्षा करि ॥ पेदे ॥ १५५ ॥ ७॥ नरि प्रपन्न्या मिममापनुद्याय छोक
मुच्छेषण मिंद्रियाणां ॥ अवाप्य भूमाव सपल मूढं राअं सुराणामपि वाधिपसे ॥
॥ ८ ॥ १० ॥ नहि ॥ निश्चये सिं नहि ॥ प्रपन्न्या मि ॥ पाहीन ॥ मम ॥ माझा ॥ अपनुचां ॥
दूर होई लसे ॥ इंद्रियाणां ॥ इंद्रियां न्या ॥ अवाप्य ॥ पावोन ॥ भुमो ॥ भुम विगई ॥
असपल मूढं ॥ रास्त्रावां नून वाढले ऐसे ॥ राअं ॥ राअ जेतें ॥ सुराणां ॥ देवत्वे ॥
अपि ॥ आणिकहि ॥ अधिपत्यं ॥ श्रेष्ठपण जेतें ॥ नाहि पाहिलें ॥ पेदे ॥ १५५ ॥ ८ ॥
संजय उवाच ॥ एवमुक्त्वा हर्षकिरां सुडा केराः परंतप ॥ नयोत्स्य इति गोविंदमु

(3)

श्र०
२

कालसीबभूवह ॥१॥ एवं गेसें ॥ उक्ता ॥ बोलोत ॥ हृषीकेशं ॥ हृषीकेश जो त्या
 ते ॥ शुभकेरा ॥ जो अर्जुन जो तो ॥ परंतप ॥ नयो ल्य ॥ युद्ध करण नाहिं ॥ इति ॥
 ऐसे ॥ उक्ता ॥ बोलोन ॥ गेविंदाते ॥ तू सी ॥ उगा ऐसा ॥ बभूवह ॥ होता जाला ॥
 पदे ॥ १२ ॥ १॥ तमुवाच हृषीकेशः प्रहसन्निवभारत ॥ सेनयोरुभयोर्मध्ये विषी
 दंतमिदं वयः ॥ १० ॥ टी ॥ हृषीकेशः ॥ हृषीकेश जो तो ॥ तं ॥ तसा अर्जुनाते ॥
 प्रहसन्निव ॥ हांसता हो त्याता ॥ उवाच ॥ बोलता जाला ॥ सेनयोः ॥ उभयोः ॥
 मध्ये ॥ दोहिसेना ज्यायामध्ये ॥ इदं ॥ हे ॥ विषीदंतं ॥ विदीर्ण जाला ऐशाते ॥
 वचनः ॥ वचन जें ते बोलतो हे ॥ पदे ॥ १२ ॥ १॥ श्रीभगवन्मुवाच ॥ अशोभ्या न
 न्यशोभ्यस्त्वप्रज्ञावादांश्च भाषसे ॥ गतास्तु न गतास्तु ॥ अनुरोचंति पंडिताः
 ॥ १३ ॥ टी ॥ त्वं ॥ तुं ॥ अशोभ्या ॥ शोकायाय न सतां ॥ अनुशोभ्यः ॥ शोक क
 रितोसि ॥ अशोभ्या ॥ प्रज्ञावतां ॥ बुद्धि मंतांचे ॥ भाषसे ॥ बोलतोस ॥ पं
 डिताः ॥ अलक्षानि ॥ गतास्तु ॥ गेल्या प्राणाते ॥ न्य ॥ अगतास्तु ॥ आल्या
 प्राणाते ॥ अनुरोचंति ॥ न ॥ निश्चयेसि ॥ शोक करित नाहित ॥ पदे ॥ १३ ॥
 ॥ १४ ॥ न त्वेवाहं जालुना सेन त्वं ने मे जनाधिपाः ॥ न वै वनमविष्यामः सर्वे वय
 मतः परं ॥ १२ ॥ टी ॥ अहं ॥ मी आला ॥ जालु ॥ कधिं हि ॥ न तु ॥ ना हि ॥ एवं गेसें ॥

(3A)

तिरिच्यते ॥ ३४ ॥ टी ॥ ते ॥ तुझि ॥ ॥ आणिक ॥ भूतानि ॥ भुते जे ते ॥ अकीर्ति ॥
अकीर्ति जे ते ॥ अय्यां ॥ नाशनाही जी सदेसि ॥ कथयंति ॥ सांगू लागती
ल ॥ संभवितस्य ॥ मान्यपुरुषजो त्यास ॥ अकीर्ति ॥ अकीर्ति जे ते ॥ मरणा
त ॥ मरणापासून हि ॥ अतिरिच्यते ॥ वाढते ॥ पदे ॥ १२ ॥ ३४ ॥ भयाद्रणादुपर
तं मंस्यंते लां महारथाः ॥ ये घातले बहुमतो भूलायास्यसिलाचवं ॥ ३५ ॥ टी ॥
लां ॥ हते ॥ महारथाः ॥ महार्थी जे ते ॥ भयात् ॥ भयास्तव ॥ रणात् ॥ रणापासू
न ॥ उपरतं ॥ परतले एवोते ॥ मंस्यंते ॥ मनितील ॥ वपरं ॥ आणिक ॥ दशां
दुर्गधनादिकांस ॥ बहुमतः ॥ बहुमान्य एसा ॥ भूला होऊन ॥ लाचवं ॥ लाहाण
पणजे पोते ॥ यास्यसील ॥ यावसील ॥ पदे ॥ १३ ॥ ३५ ॥ अवाच्यवादां श्रबहू
नूवदिष्यंतितवाहिताः ॥ निदंतस्तवसामर्थ्यं ततो दुःखतरं क्वकिं ॥ ३६ ॥ टी ॥ अ
वाच्यवादानू ॥ बोलाने येत ते बोलजे ते ॥ तव ॥ तुझे ॥ आहिताः ॥ हितदृष्टिना
ते ते ॥ बहूनु ॥ बहुसाल ॥ ॥ आणिक ॥ वदिष्यंति ॥ बोलतील ॥ तव ॥ तुझे ॥
सामर्थ्यं ॥ पराक्रमजो पोते ॥ निदंतः ॥ निदिंत होलाते ॥ ततः ॥ त्यानेतर ॥ दुः
खतरं ॥ दुःखाहून दुःख ॥ किं ॥ नु ॥ कायमोह ॥ पदे ॥ १३ ॥ ३६ ॥ हतोवाप्रा
प्यसि स्वर्गं जित्वा वा मोक्ष्यसमहो ॥ तस्मादुत्तिष्ठ को तपयुहाय रुतनि श्रयः ॥ ३७ ॥

(५)

अ०

२

दी०॥ चित्तदुर्बला अर्जुना॥ वा॥ विकल्पे॥ जित्वा॥ जिंकिले तीरे॥ मही॥ पृथ्विते॥
 भोक्ष्यसे॥ प्रोगिशील॥ तस्मात्॥ त्याकारणास्तव॥ युद्धाय॥ युद्धाकारेण॥ कृतनि
 श्रयः॥ केलाओहनि श्रयजेणे देसा॥ उत्तिष्ठ॥ उठ॥ पदे॥ १२॥ ३७॥ स्तखदुः
 खसमेकत्वाला भाला भौजयाज्यो॥ ततो युद्धाय युज्यस्व नैव पापमवाप्स्य
 सि॥ ३८॥ दी०॥ स्तखदुःखसमेकत्वा॥ स्तखदुःखसमान करुत॥ ततः॥ त्यानं
 तर॥ युद्धाय॥ युद्धाकारेण॥ युज्यस्व॥ युक्त हो॥ एवं॥ पुर्व॥ बोलिले असेते॥
 पापं॥ पापजेते॥ न॥ अवाप्स्यसि॥ पावेनास॥ ३८॥ पदे॥ ११॥ एषा ते मिहितासां
 ख्यबुद्धिर्योगेति मां शृणु॥ बुद्ध्या युक्तो यया पार्थ कर्मबंधं प्रहास्यसि॥ ३९॥ दी०॥
 एषा॥ हे॥ ते॥ तुज कारेण॥ अभिहिता॥ बोलिले॥ सांख्ये॥ परमार्थ वस्तु विवे
 कि॥ शास्त्र सांख्या व्यावर्द्ध॥ बुद्धिः॥ ज्ञान बुद्धि जेते॥ योगे॥ प्राप्ति साधि॥ तु॥
 पुन्हा॥ दुमां॥ हे॥ शृणु॥ ऐक॥ मया॥ त्या॥ बुद्ध्या॥ बुद्धिने॥ युक्तः॥ योगे जिला
 जा मिल॥ तीरे॥ पार्था॥ कर्मबंधं॥ कर्म पाशाते॥ प्रहास्यसि॥ अतिशये सिंहा
 कि सील॥ अतिशये सिंहा स सील॥ पदे॥ १६॥ ३९॥ नेह भि क्रमनाशो॥ स्तिप्र
 त्ययो न विद्यते॥ स्वल्पमप्यस्य त्रायते महतो भयात्॥ ४०॥ दी०॥ न॥ नाहिं॥ इह॥
 मोक्षमगि योग जोलावेगई॥ अभि क्रमनाशः॥ आरंभिहीया क्रमानानाशना

७

(4A)

हिं॥ अस्ति॥ ओह॥ प्रत्ययायः॥ दोषजेतो॥ न॥ विद्यते॥ विद्यमानेहातनाहिं॥
अस्य॥ या॥ धर्मस्य॥ धर्मावे॥ स्वल्पं॥ अपि॥ थोउं हिज हिंत हिं॥ महतः॥
थोरा॥ भयात्॥ भयापासून॥ त्रायेता॥ रक्षितो॥ पदं॥ १६॥ ६॥ व्यवसायालि
काबुद्धिरेकेहकुरुनंदन॥ बहुशाखास्यनेता॥ अबुद्ध्याव्यवसायिनां॥ १७॥ टी॥
हेकुरुनंदन॥ दूह॥ श्रेयस्करमार्गान्यागदं॥ बुद्धिः॥ बुद्धिजेते॥ एका॥ एकस्त्री॥
व्य॥ व्यवसायालिकाः॥ निश्चयस्वभावा॥ अव्यवसादनां॥ निश्चयनाहिं उपासत्याया॥
॥ १८॥ आणिक॥ बुद्धयः॥ बुद्धिज्यात्या॥ अनंताः॥ नाहिं अंत उपासेद्या॥ १९॥ बहु
शाखाः॥ बहुसालखाया॥ फुटताहेत॥ पदं॥ १९॥ १९॥ यामिमं पुष्पितां वन्यं
प्रवदं त्यक्पश्चिताः॥ वेदवादरताः॥ पार्थनान्यदस्तीतिवादिनः॥ २०॥ टी॥ यां॥
जितं॥ द्रुमं॥ हेबुद्धितं॥ पुष्पितं॥ पुष्पवंत एवति॥ वाचं॥ वाचाजेतीति॥ अवि
पश्चिताः॥ अविवेकीजिते॥ प्रवदंति॥ बोलताहेत॥ हेपार्थ॥ वेदवादरतः॥ वे
दवादिं मोहितजेते॥ दूति॥ ऐसे॥ वादिनः॥ वादिजेत्यांस॥ अन्यतु॥ दुसरेकां
हिं॥ न॥ नाहिं॥ पदं॥ २०॥ २०॥ कां॥ कामात्मानः॥ स्वर्गपराजन्मकर्मफलप्र
दां॥ क्रियाविशेषबहुलां॥ मोगैश्वर्यगतिं प्रति॥ २१॥ टी॥ कामात्मानः॥ काम
मारूपओहअंतःकरणव्यतिरेकेसेते॥ स्वर्गपराः॥ स्वर्गओहमुख्यव्यासेसेते॥

(5)

अ०
२

विं

जन्मकर्मफलप्रदां॥ जन्मकर्मफलेदणारएशीतिं॥ क्रियाविशेषबहुलं॥ क्रि
 याकरायन्विंविशेषअणिवहुलफारेएशो॥ भोगैश्वर्यगतिं प्रति॥ भोगैश्व
 र्यगतीतिंपावतोहत॥ पदं॥ ६३॥ भोगैश्वर्यप्रसक्तानां तयापहतचेतसां॥
 व्यवसायात्मिकाबुद्धिरैकैर्दृक्कैरेवैदना॥ ६४॥ १०॥ समाधौ न विधीयते॥ ६४॥
 १०॥ भोगैश्वर्यप्रसक्तानां॥ भोगावसंपत्तिस्तथा भलियान्विं॥ तथा॥ अव्य
 वसाद्बुद्धिने॥ अपहतचेतसां॥ बोधनेनेलंओहवित्तउंविंऐसेजेसंवि॥
 व्यवसायात्मिकाबुद्धिः॥ सांख्ययोगोत्तमबुद्धिजेते॥ समाधौ॥ बरवेप्रका
 रेनिश्चरं देवायास॥ न॥ विधीयते॥ नाहिं होतं॥ पदं॥ ७॥ ६४॥ त्रैगुण्यविष
 यावेदानिस्त्रैगुण्यो भवान्नुन॥ निर्द्वंद्वोनित्यसत्त्वस्थानिर्योगक्षेमआत्मवान्॥
 ॥ ६५॥ १०॥ हेअर्हन्॥ त्रैगुण्यविषयावेदाः॥ विदजेते॥ त्रिगुणात्मककर्मैजं
 तंओहतआवीड्यासऐसे॥ तुंतो॥ निस्त्रैगुण्यः॥ गुणत्रयस्यापास्कनगेलि
 ओहतऐसा॥ भव॥ हो॥ कैसाआणिकहोशील॥ निर्द्वंद्वः॥ गेलीओहत
 दोनीपेणआखिएसा॥ नित्यसत्त्वस्थः॥ अखंडसत्त्वगुणीराहा॥ निर्योगक्षेमः॥
 नाहिं तैमेळवें॥ मेळवेलं तैराखेण॥ आत्मवान्॥ आत्मस्थितीतराहोन॥
 पदं॥ ११॥ ६५॥ यावानर्थ उदपाने सर्वतः संप्लुतोदके॥ तावान्सर्वेषु वेदेषु ब्रा

(SA)

जाति ॥ ५० ॥ १४ ॥ ५ ॥ यदा संहरते वायं कूर्मो गानी व सर्वशः ॥ तः ॥ इंद्रियाणी
द्रियार्थेभ्यस्तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥ ५५ ॥ टी ॥ यदा ॥ जिकांति ॥ संहरते ॥ अवरो
नैवतां ॥ वा ॥ जाणिक ॥ अयं ॥ हा ॥ कूर्मः ॥ कूर्मजो तो ॥ अंगानि ॥ अंगे जं जं ॥
एवं ॥ ऐत्री ॥ सर्वतः ॥ सर्वापास्तुन ॥ तैत्री ॥ इंद्रियाणि ॥ इंद्रिये जं तं ॥ इंद्रि
यार्थेभ्यः ॥ चेष्टितगोडीपास्तुन ॥ तस्य ॥ तानी ॥ प्रज्ञा ॥ बुद्धिजेते ॥ प्रतिष्ठिता ॥
राहिली ॥ ५० ॥ १४ ॥ ५ ॥ विषया विनिवर्तते निराहारस्य देहिनः ॥ रसवर्जं र
सोपस्य परं दृष्ट्वा विवर्तते ॥ ५५ ॥ टी ॥ विषयाः ॥ विषयजेते ॥ विनिवर्तते ॥ परत
ताहेत ॥ निराहारस्य ॥ गेले आहृत आहार ज्यं नेत्याने ॥ देहिनः ॥ देहवं तवे ॥
रसवर्जं ॥ रसवर्जितां ॥ रसः ॥ रसजो तो ॥ अपि ॥ पुक्का ॥ अस्य ॥ यत्न ॥ परं ॥
उत्कृष्ट ॥ दृष्ट्वा ॥ देखान ॥ विवर्तते ॥ जातो ॥ ५५ ॥ ५ ॥ यततो ह्यपि कौंतयपु
रुषस्य विपश्चितः ॥ इंद्रियाणि प्रमाथी निहरंति प्रसभं मनः ॥ ६० ॥ टी ॥ हे कौं
तेय ॥ अपि ॥ पुन्हा ॥ हि ॥ निश्चक्रेयं रूत ॥ यततः ॥ यत्नकर्ता जो त्याची ॥ पुरुषस्य ॥
पुरुषजो त्याची ॥ विपश्चितः ॥ पंडित जो त्याची ॥ इंद्रियाणि ॥ इंद्रिये जं तं ॥ प्र
माथीनि ॥ बळकट हो त्यातां ॥ मनः ॥ मने जं तं ॥ प्रसभं ॥ अतिशयं शिं ॥ हरं
ति ॥ हरितोहत ॥ ५५ ॥ ६० ॥ तानि सर्वाणि संयम्य युक्त आसीत मत्परः ॥ वरोदिय

(6)

अ०
२

स्येन्द्रियणितस्य प्रज्ञाप्रतिष्ठिता ॥ ६१ ॥ तानि सर्वाणि संयम्य ॥ तैर्सेव्यं हिं
 नियमून ॥ युक्तः ॥ युक्तो हो स्यात् ॥ मत्तः ॥ मज्जन्तून् दुर्सेना हिंसां स एसाजो
 तो ॥ असीत ॥ असतो ॥ हि ॥ निश्चये कर्तुं ॥ वदो ॥ वदो व्यागदं ॥ यस्य ॥ अन्वि ॥
 दून्द्रियणि ॥ दून्द्रियैर्जेतं ॥ तस्य ॥ त्यागी ॥ प्रज्ञा ॥ बुद्धिजेते ॥ प्रतिष्ठिता ॥ वेस
 ली ॥ प० ॥ ११ ॥ ६१ ॥ ध्यायतो विषयान् पुंसः संगस्तेषूपजायते ॥ संगस्तं जा
 यते कामः ॥ कामात् क्रोधो भिजायते ॥ ६२ ॥ ध्यायतो विषयान् ॥ विषयैर्जेतं ॥ ध्या
 यतः ॥ ध्यानकर्त्ता ज्ञो त्यास ॥ पुंसः ॥ पुरुषो ज्ञो त्यास ॥ तेषु ॥ विषया व्यागदं ॥ सं
 गः ॥ समागमे जातो ॥ जायते ॥ होतो ॥ संगतः ॥ संगतः ॥ संगपासून ॥ संजा
 यते ॥ उत्पन्ने होतो ॥ कामः ॥ कामो जातो ॥ कामात् ॥ कामपासून ॥ क्रोधः ॥ क्रो
 धो जातो ॥ अभिजायते ॥ अतिव्यापं सिंहोतो ॥ पदं ॥ ६२ ॥ ६२ ॥ क्रोधाद्भवति
 संमोहः ॥ संमोहात् स्मृतिविभ्रमः ॥ स्मृतिभ्रंशो बुद्धिनाशो ॥ बुद्धिनाशात् प्रण
 श्यति ॥ ६३ ॥ टी० ॥ क्रोधात् ॥ क्रोधापासून ॥ स्मृतिविभ्रमः ॥ स्मरणान्नाशं
 राहोतो ॥ स्मृतिभ्रंशात् ॥ स्मृतिभ्रंशपासून ॥ बुद्धिनाशः ॥ बुद्धिचानाश
 होतो ॥ बुद्धिनाशात् ॥ बुद्धिनाशापासून ॥ प्रणश्यति ॥ नाशो जातो ॥ ११ ॥ ६३
 रागे द्वेषवियुक्तेस्तु विषयानि द्वयैश्चरन् ॥ आत्मवश्ये विधेयात्मा प्रसादमधिगच्छति ॥ ६४ ॥

५१

(6A)

टी०॥ रागेद्वेषवियुक्तैः॥ रागेद्वेषापासून सटलं एरि जिंजे॥ तु० पु० ह्या० इंद्रियः॥ इंद्रियं जं
तिं हिं कस्तु॥ विषयान् विषयं जेत्यांते॥ वरत सनू॥ फिरत असतां॥ आत्मवश्ये॥
आपणासवश्ये एरिं जंति हिं॥ विधेयात्मा॥ आपणासारिखा आत्मा जाला अस
सतां॥ प्रसाद॥ प्रसाद जो त्यांते॥ अधिगच्छति॥ पावतो॥ पदं॥ ध्या०॥ श्लो०॥
प्रसादे सर्वदुःखानां हानिरस्योपजायते॥ प्रसन्ने चेत्सोऽस्याशुबुद्धिः पर्यवति
ष्ठति॥ ध्या० टी०॥ प्रसादे सति॥ प्रसाद जाला असतां॥ सर्वदुःखानां॥ अध्या
त्मिकादिदुःखानि॥ हानिः॥ नाश जोतो॥ अस्मि॥ यानि॥ उपजायते॥ होत
आहे॥ प्रसन्ने चेत्सः॥ स्वस्वाकरण जो त्यास॥ हिं निश्चयेसि॥ आशु॥ शिघ्र॥
बुद्धिः॥ बुद्धि जेतो॥ पर्यवतिष्ठति॥ परिपूर्ण कामेसा आत्मस्वरूपे लीन राहतो
पदं॥ ध्या०॥ ध्यानास्ति बुद्धिरयुक्तस्य न वा युक्तस्य भावना॥ न वा भावयतः शान्ति
रत्रांतस्य कुतः॥ ध्या० टी०॥ अयुक्तस्य॥ अयुक्त जो त्यासी॥ बुद्धि जेतो॥
नास्ति॥ ना हिं॥ च॥ आणिक॥ अयुक्तस्य॥ अयुक्त जो त्यास॥ भावना॥ आला
भिनिवेश जोतो॥ न॥ ना हिं॥ अभावयतः॥ आत्मनि विनाश ना हिं त्यास॥
शान्तिः॥ उपशम जोतो॥ न॥ ना हिं॥ अत्रांतस्य॥ अत्रांत जो त्यास॥ स
खे॥ सखे जेतो॥ कुतः॥ कैतें॥ पदं॥ ध्या०॥ इंद्रियाणां हिवरतां यमनो नु विधीय

(७)

अ०
२

येते॥ तदस्पहरति प्रज्ञां वायुर्नावमिवांभसि॥ ६७॥ ६८॥ इंद्रियाणां॥ इंद्रियांवेगदं॥
 हि॥ वरतां॥ विषयंवेगदं प्रवर्तमान असतां॥ यत्॥ आकारणास्तव॥ मनः॥ मनोजं
 ते॥ अनुविधीयते॥ अनुष्ठिते॥ न॥ नाहिं॥ तत्॥ ते॥ मनः॥ मनोजं ते॥ अस्या॥ अ
 युक्तानि॥ प्रज्ञा॥ बुद्धिजेते॥ हरति॥ दुरुत्तति॥ कोणाचेपरि॥ वायुः॥ वायुजा
 तो॥ अंभसि॥ उदकाभ्यागदं॥ नावमिव॥ नावेचेपरि॥ पदे॥ ६९॥ ७०॥ तस्मात्तस्य
 महाबाहेनिग्रहीतानि सर्वराः॥ इंद्रियाणि॥ इंद्रियार्थभ्यस्तस्य प्रज्ञाप्रतिष्ठिता॥ ६९
 ७०॥ तस्मात्॥ त्याकारणास्तव॥ अस्या॥ यावि॥ महाबाहो॥ घोराओह तदस्तया
 चेजैरा॥ अर्जुना॥ सर्वराः॥ असमंताद्भवेकरुने॥ निग्रहीतानि॥ निरोधकरुने॥ ७१
 ७२॥ वेतलिं ऐशिं॥ इंद्रियाणि॥ चेष्टाकर्ति ऐशिं॥ इंद्रियं जेतें॥ इंद्रियार्थभ्यः॥ वेषा
 गोडिजेतिपासन॥ तस्य॥ त्याचि॥ प्रज्ञा॥ सांख्यबुद्धिजेते॥ प्रतिष्ठिता॥ स्थिरा
 वलि॥ पदे॥ ७३॥ ७४॥ यानि शास्त्रेभूतानां तस्या जागर्ति संयमि॥ यस्यां जाय
 त्भूतानि सानि शास्त्रेभूतानां तस्या जागर्ति संयमि॥ ७५॥ ७६॥ सर्वभूतानां॥ स्थावराजंगमादिभू
 तं जेत्यां स॥ याजे॥ निरा॥ आत्मलविषदं भू न्यतातेरात्रिजेते॥ तस्यां॥ त
 रारात्रियागदं॥ संयमि॥ इंद्रियनिग्रहीतो॥ जागर्ति॥ आत्मलिविवेकैहा वंत
 त्साता जागता॥ भूतानि॥ भूतं जेतें॥ तस्यां॥ अन्यथा ज्ञानरात्रियागदं॥ जागर्ति॥

(7A)

व्यवहारे जागताहेत ॥ पश्यतः ॥ ज्ञानयक्षनिपाहाणारजोत्यास ॥ सः ॥ तो ॥ मु
नेः ॥ मनत्रिजो ॥ सा ॥ निशा ॥ शुन्यवतिरुपरत्रि ॥ पेदं ॥ १२ ॥ ध्या ॥ अपूर्यमाण
मक्कप्रतिष्ठसमुद्रमापः प्रविशंति यद्दू ॥ तद्वत्कामायं प्रविशंति सर्वे सशंति
माप्नोति न कामकामि ॥ ७० ॥ टी ॥ अपूर्यमाण ॥ कोणहत्वेन भरलानवजायये
सापरिपूर्णे ॥ अवलं ॥ चंचलनेह एवाते ॥ प्रतिष्ठं ॥ स्थिराहिल एवाते ॥ स
मुद्रं ॥ समुद्राते ॥ अपः ॥ उदकं जेतं ॥ यद्दू ॥ अविपरि ॥ प्रविशंति ॥ प्रवेशक
रितोहेत ॥ तद्दू ॥ त्यविपरि ॥ कामा ॥ मेनारथजेव ॥ अयं ॥ आत्मा पूर्णब्रह्मे
योते ॥ प्रविशंति ॥ प्रवेशकरितोहेत ॥ सर्व ॥ सर्वहि ॥ सः ॥ तो पूर्णकामजोतो ॥
शंति ॥ शंतिर्जेतितं ॥ अवाप्नोति ॥ पावतो ॥ कामकामि ॥ कामेनं सिं कामना
वाढवील्लेजोतो ॥ न ॥ शंतिं तं पावतनाहि ॥ प ॥ १३ ॥ ७० ॥ विहाय कामान्यः स
र्वोत्पुमानश्चरति निस्पृहः ॥ निर्मम निरहंकारः स शंतिमधिगच्छति ॥ ७१ ॥ टी ॥
यः ॥ जो ॥ सर्वान् ॥ सर्वहि ॥ कामान् ॥ कामे जेत्यंते ॥ विहाय ॥ राकून ॥ पुमान् ॥ पु
रुषजोतो ॥ निस्पृहः ॥ गेली ओह स्पृहावृष्टायावी ॥ ऐसा होऊने ॥ निर्ममः ॥
गेली ओह ममतायावि ॥ निरहंकारः ॥ गेली ओह मीपण भाव ऐसा जोतो ॥
सः ॥ तो ॥ शंति ॥ शंतिं ॥ अधिगच्छति ॥ पावतो ॥ पेदं ॥ १३ ॥ ७१ ॥ श्लो ॥

(४)

एषा ब्राह्मी स्थितिः पार्थ नैनं प्राप्य विमुह्यति ॥ स्थित्वास्यामं त काले पिब्रह्म निर्वाण
 गच्छति ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ हे पार्थ ॥ एषा ॥ पूर्वाक्त प्रको बोलिले तेद ॥ ब्राह्मि ॥ ब्रह्म
 मिका ॥ स्थितिः ॥ राहणं ऐदि जिते ॥ एनां ॥ दूतं ॥ प्राप्य ॥ पावोन ॥ न ॥ विमु
 ह्यति ॥ मोहोतं पाववीतना हिं ॥ अस्यां ॥ पिबे गदं ॥ स्थित्वा ॥ नै सो न ॥ अंत
 काले पि ॥ अंत काले चिदि गदं ॥ ब्रह्म निर्वाण ॥ निदान ब्रह्मोतं ॥ मच्छति ॥ पा
 वतो ॥ पेदं ॥ १४७ ॥ ७४ ॥ अद्विती श्री गीता पदार्थ माळयां द्वितीयाध्यायः ॥ पेदं १५५
 श्रीरुद्रार्पणमस्तु ॥ १५५ ॥ १५५ ॥

अ०
२

॥ १५५ ॥



(१)

श्रीपांडुरासमर्थ॥ अर्जुन उवाच॥ आयासीये त्वर्मणस्ते मता बुद्धिर्जनार्दन॥ तत्किं कर्मणि
द्यौरेमांनियोजयसि के राक्ष॥ १॥ हे जनार्दन॥ तुज गेवत्॥ जरि॥ कर्मणः॥ कर्मायि॥
आयासी॥ श्रेष्ठे एशि॥ बुद्धिः॥ बुद्धिजेते॥ मत्ता॥ मानलि॥ हे के राव॥ तरि॥ द्यौरे॥
द्यौरुपाय्यागदं॥ कर्मणि॥ कर्माते॥ मां॥ माते॥ नियोजयसि॥ निश्चये॥ सिंयोजितो
सि॥ तत्किं॥ ते काय॥ पदे॥ १॥ १॥ व्यामिश्रेणैव वा केन बुद्धिं मोहयसीव मे॥ तदेकं
वद निश्चित्येन श्रेयो ह माप्नुयां॥ २॥ १॥ मे॥ मांसी॥ बुद्धिं॥ बुद्धिजेते॥ व्यामिश्रेणे
व॥ मिसळलिं॥ ऐशिं॥ वा केन॥ वचनजेतेणं करुत॥ मोहयसीव॥ मे॥ हव करि
तोस॥ तत्ते॥ एकं निश्चित्य॥ एकं निश्चयं करुत॥ वद॥ बोलयेन॥ आवाक्येन॥ अ
हं॥ मी॥ श्रेयः॥ स्वरुजेते॥ अप्नुयां॥ पावेन॥ पदे॥ १॥ १॥ श्रीभगवानुवाच॥ लोकेस्मि
नू द्विविधनिष्ठा पुरा प्रोक्ता मया न च॥ ज्ञानयोगेन सांख्यानं कर्मयोगेन योगिनां॥
१॥ १॥ १॥ हे जनध॥ निःपापा॥ अर्जुन॥ मया॥ म्यां॥ अस्मिन् लोके॥ यलोकाव्याप
दं॥ पुरा॥ पुर्वं॥ द्विविधा॥ द्वे प्रकारि॥ निष्ठा॥ स्थितिजेते॥ प्रोक्ता॥ बोलि लि॥ सां
ख्यानं॥ अत्मानात्मवैकिल्ये सांख्यजेत्यां स॥ ज्ञानयोगेन॥ ज्ञानयोगे जेतेणं करुत॥
योगिनां॥ कर्मजेत्यां स॥ पदे॥ १॥ १॥ न कर्मणामनारंभानैकैर्कर्म्यपुरुषोऽश्नुते॥
न च संन्यसनादेर्वसिद्धिं समधिगच्छति॥ ४॥ १॥ पुरुषः॥ पुरुषजेते॥ कर्मणां॥ क

ती॥ १॥

(१०)

अ०

३

मीजें संख्या॥ अनारंभात्॥ अरेमिलियावां नून॥ नैष्कर्म्य॥ नैष्कर्मज्ञानजें तें॥ न
 अश्रुते॥ पावतना हिं॥ न॥ आणिका॥ संन्यसनादेव॥ त्यागावां नून॥ न॥ सिद्धिं॥ सि
 द्विजेतितें॥ नाहिं॥ समगच्छति॥ बरेवेप्रकोरं जात॥ पदें॥ ११॥ नहिकश्चित्तक्षण
 मपि जालु तिष्ठसकर्मरुतें॥ कार्यतेत्यवराः कर्मसर्वेः प्रवृत्तिजैर्गुणैः॥ १२॥ १३॥ १४॥ हिं॥
 यस्मात्॥ आकारणास्तव॥ कश्चिद्॥ कोण्हिएक॥ क्षणं॥ अपि॥ क्षणहिं॥ अकर्मरु
 तू॥ अकर्मकर्ता ऐसा॥ कदाचित्॥ केधवां हिं॥ न॥ तिष्ठति॥ नाहिं राहत॥ सर्वेः
 प्रवृत्तिजैर्गुणैः॥ सर्वहिप्रवृत्तिपास्तून जालें ऐसे गुणजति हिं॥ अवराः॥ वराजाला
 न होत्साता॥ कर्म॥ कर्मजें तें॥ हिं॥ निश्चयानं॥ कार्यते॥ करिजें तें॥ पदें॥ १५॥ १६॥
 कर्मद्रियाणि संयम्य यः अस्ते मनसा स्मरन्॥ इंद्रियार्थान् विमूढात्मा मिथ्याचारः स
 उच्येत॥ १७॥ १८॥ यः॥ ज्ञो॥ कर्मद्रियाणि॥ राक्षसाणि पादगुदोपस्थादिकर्मद्रिये जें॥
 त्यातें॥ इंद्रियार्थान्॥ वचनअदानुगमन मोहने मेथुन ऐसे कर्मद्रियविषय जे संयतें॥
 संयम्य॥ नियम करुन॥ मनसा॥ मन जें तें कर्तुन॥ स्मरन्॥ आगवीत होत्साता॥
 अस्ते॥ असतो॥ सः॥ तो॥ विमूढात्मा॥ मूर्ख ओह अंतःकरण ज्यांचें ऐसा॥ तो॥
 मिथ्याचार॥ लटका आचरण ऐसा॥ उच्येत॥ बोलावा॥ पदें॥ १९॥ २०॥ यस्त्विंद्रि
 याणि मनसा संयम्य नियम्यारभतेर्जुन॥ कर्मद्रियैः कर्मयोगमसक्तः स विद्विष्यते

३

(10A)

॥७॥ शी॥ हे अर्जुन ॥ यः ॥ जो पुरुष जो तो ॥ तु ॥ पुन्हा ॥ इंद्रियाणि ॥ इंद्रियें जें तें ॥ मन
सा ॥ मेनें करुन ॥ नियम्यो नेमून ॥ आरभते ॥ आरंभितो ॥ सः ॥ तो ॥ कर्म द्वियैः ॥
वाक्पाण्यादि कें जें तें हिं ॥ कर्म योगं ॥ कर्म योग जो त्या तें ॥ असक्तः ॥ सन् ॥ लिं पला
नसतां ॥ विशिष्यते ॥ विशेषातें पावतो ॥ पेदं ॥ १५॥ ७॥ नियतं कुरु कर्म त्वं कर्म जा
योत्य कर्मणः ॥ शरीरयात्रापि चेतमप्रसिध्यदकर्मणः ॥ ८॥ शी॥ हे अर्जुन ॥ तं ॥ तुं ॥
नियतं ॥ स्वर्णाश्रमधर्मं नेमिलें तें ॥ कर्म ॥ कर्म जें तें ॥ कुरु ॥ करिं ॥ हि ॥ निश्चये
सिं ॥ अकर्मणः ॥ कर्म न करि जो त्यापरि स ॥ कर्म ॥ कर्म करणें जें तें ॥ ज्यायः ॥ श्रेष्ठ
तम ॥ अपि ॥ च ॥ आणि कहि ॥ अकर्मणः ॥ कर्म न कर्तौ जो त्याची ॥ शरीरयात्रा ॥ शरी
रासेयण्याची वाट जेते ॥ ते ॥ तुही ॥ न ॥ प्रसिद्धे न ॥ कटणार न हिं ॥ पेदं ॥ १५॥
यज्ञार्थात्कर्मणो न्यत्रलोकायं कर्म बंधनः ॥ तदर्थं कर्म कौं ते यमुक्तसंगः समाचर ॥
॥ १॥ शी॥ हे कौं ते य ॥ अयं लोकः ॥ हा लोक जो तो ॥ कर्म बंधनः ॥ कर्म निबांधला आ
हे ॥ कर्मणः ॥ कर्म जें त्यांस ॥ यज्ञार्थात् ॥ यज्ञविषय जो त्यास्तव ॥ अन्यत्र ॥ आणि केव
द् ॥ तदर्थं ॥ त्याविषयातें ॥ कर्म ॥ कर्म जें तें ॥ मुक्तसंगः ॥ सोडिला आह संगे एसा ॥ स
माचर ॥ अचरण कर ॥ पेदं ॥ १५॥ १॥ सहयताः प्रजाः स्रष्ट्वा पुरा वाच प्रजापतिः ॥
अनेन प्रसविष्यध्वमेषोऽस्तिष्ठकामधुक् ॥ १॥ शी॥ प्रजापतिः ॥ प्रजा आयां न्वाप

(१)

अ०
३

त्रिजो स्वामी जैते भे पुरा ॥ पुर्वं ॥ सहयताः ॥ प्रजाः ॥ ये जं सिंसहवर्तमान प्रजा जालो
 कजेते ॥ सस्था ॥ उत्सन्नकरुन ॥ उवाच ॥ बोलता जाला ॥ अनन ॥ यज्ञजोतेणे ॥ प्र
 सविष्यध्वं ॥ इदिते पाववा ॥ एषः ॥ यज्ञजोते ॥ वः ॥ तुष्टास ॥ इष्टकाम घुक् ॥ इ
 ष्मनोरथ दुहणारे एसा ॥ अस्त ॥ असे ॥ पेदं ॥ १२ ॥ १० ॥ देवान् भावयतानेन ॥ ते दे
 वा भावयंतु नः ॥ परस्परं भावयंतः श्रेयः परमवाप्स्यथ ॥ ११ ॥ टी ॥ वः ॥ युष्माकं ॥ तुष्टा
 स ॥ देवान् ॥ इंद्रादिके देवांते ॥ भावयत ॥ अनन ॥ यज्ञं करुन भावित असतां ॥ ते दे
 वाः ॥ ते देव जेते ॥ भावयंतु ॥ भाउत्त ॥ परस्परं ॥ एकमेकां परस्परं ॥ भावयंतः ॥ भा
 वित असतां ॥ परं ॥ उत्कृष्टे एसे ॥ श्रेयः ॥ ज्ञान निष्कामे त्वं अथवा क्रमे करुन स्वर्ग प्रा
 प्ति ते ॥ अवाप्स्यथ ॥ पावत्त ॥ पेदं ॥ १२ ॥ ११ ॥ इष्टान् भोगान् हि वेदेवा दास्यंते यज्ञ
 भाविता ॥ ते ह तान प्रदायेभ्यो यो भुंक्ते स्तेन एव सः ॥ १२ ॥ टी ॥ इष्टान् ॥ इच्छिते एसे
 जेते ॥ भोगान् ॥ भोगांते ॥ वः ॥ तुष्टांते ॥ देवाः ॥ देव जेते ॥ दास्यंते ॥ देतीला ॥ यज्ञ भावि
 ताः ॥ यजनिं भावित असतां ॥ तैः ॥ देव जेति हिं ॥ दत्तान् ॥ दिल्ले असतां ॥ एभ्यः ॥ एसे जे
 यांस ॥ अप्रदाय दिल्ल्यावांचून ॥ यः ॥ जे ॥ भुंक्ते ॥ भोगिता ॥ सः ॥ तो ॥ स्तेन एव ॥ भोर
 रज्जाणावा ॥ पेदं ॥ १२ ॥ १२ ॥ यज्ञशिष्टाग्निः संतोमुच्यंते सर्वकिल्बिषैः ॥ भुंजते तेल
 चंपापोपपंचसात्मकारणात् ॥ १३ ॥ टी ॥ यज्ञशिष्टाग्निः संतः ॥ यज्ञशेष भोक्ते जाले

(11A)

असतां॥ सर्वकिल्बिषैः॥ सर्वपापे जंति हिं कस्तन॥ मुख्यं ते॥ सारतो हत॥ ये॥ जे॥ अत्मका
रणात्॥ अत्मकारेण जंत्यास्तव॥ पंचति॥ पंचविताति॥ तदुं॥ ते जे ते॥ पाप्राः॥ पाप रूपि॥
अचं॥ पापोतं॥ भुं जंते॥ भसितो हत॥ पदं॥ ११२॥ अन्नाद्भवंति भूतानि पर्जन्या
दन्नसंभवः॥ यज्ञाद्भवति पर्जन्यो यज्ञः कर्मसमुद्भवः॥ ११३॥ ११४॥ अन्नात्॥ अन्नापा
सून॥ भूतानि॥ भूतं जंते॥ भवंति॥ होता ओहित॥ पर्जन्यात्॥ पर्जन्यापासून॥ अन्न
संभवः॥ अन्नमिउत्पत्तिहोते॥ यज्ञात्॥ यज्ञापासून॥ पर्जन्यः॥ पर्जन्यजोतो॥ भ
वति होतो॥ यज्ञः॥ यज्ञजोतो॥ कर्मसमुद्भवः॥ कर्मो होतुमुद्भवज्यान्वा॥ पदं॥ ११५॥ ११६॥
कर्मब्रह्माद्भवं विद्मि ब्रह्माक्षरसमुद्भवं॥ तस्मात्सर्वगतं ब्रह्म नित्यं यज्ञे प्रतिष्ठितं॥ ११७॥
कर्म॥ कर्मजंते॥ ब्रह्माद्भवं वेदापासून उद्भवज्यान्वा एते प्रकाशे॥ विद्मि॥ जाणा॥ ब्र
ह्माक्षरसमुद्भवं॥ वेदजोतो अक्षरं॥ जे परमात्म स्वरूपे जंत्यापासून उद्भवज्यान्वा एते
प्रकाशे॥ तस्मात्॥ साकारास्तव॥ सर्वगतं ब्रह्म॥ सर्वत्र विद्यमान वेद ब्रह्म जंते॥
नित्यं॥ अखंडं॥ यज्ञे॥ प्रतिष्ठितं॥ यज्ञोत्पत्तिं॥ राहितं ओह॥ पदं॥ ११८॥ ११९॥ एवं प्रवर्ति
तं चक्रं नानुवर्तयतीह यः॥ अयौ धातु रद्वयारामे मिथं पार्थ स जीवति॥ १२०॥ १२१॥
एवं॥ ऐसे॥ प्रावर्तितं॥ चक्रं॥ फिरी वेलें ऐसे जं चक्र जंते॥ दह॥ यावत्काव्यावां॥ य॥
जो॥ न॥ अनुवर्तयति॥ अनुक्रमं कस्तन वर्तत नाहि॥ सः॥ तो॥ अथायुः॥ पाप रूपो ह



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com